कौटिल्य एकेडमी

अनुक्रमांक / Roll No.

परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक यहाँ लिखें।
Candidate should write his/her Roll No. here

कुल प्रश्नों की संख्या : 3+3
Total No. of Questions : 3+3

मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 04
No. of Printed Page : 04

M-2021
PAPER-V
DATE : 17-03-2022

समय : 3 : 00 घण्टे
Time : 3 : 00 Hours

पूर्णांक : 200
Total Marks : 200

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :
Instructions of the candidates :

1. प्रत्येक खण्ड में कुल तीन प्रकार के प्रश्न है। सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
2. प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित है।
3. प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए, जिसका चयन आपने आवेदन पत्र में किया है। किसी अन्य माध्यम में लिखे गये उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेगा।
4. जहाँ शब्द सीमा दी गई है उसका अवश्य पालन करे।
5. प्रश्न पत्र के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार दें। एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जायें तथा उनके बीच अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जायें।

भाग–अ (Part -A)

funsZ'k& lHkh ç'uksa ds mÙkj vis{kr gSaA

ç-1- bu y?kqmÙkjh; ç'uksa ds mÙkj vfèkdre 50 'kCnksa esa ¼,d ;k nks iafä;ksa esa½ nhft,A
çR;sd ç'u 3 ¼rhu½ vadksa dk gSA 25x 3 = 75

(1) प्रारूपण माने क्या?
(2) उत्पत्ति की दृष्टि से शब्द कितने प्रकार के होते?
(3) प्रत्ययों को भेदों सहित बताइए?
(4) परिभाषिक व अर्द्धपरिभाषिक शब्दों में अन्तर लिखिए?
(5) शब्द माने क्या?
(6) देवनागरी का विकास किस लिपि में हुआ?
(7) व्याकरण माने क्या?
(8) सार्थक–निरर्थक शब्द युग्म को समझाइये।
(9) व्यंजन संधि माने क्या?
(10) समास किसे कहते हैं?
(11) पल्लवन की तीन विशेषताएँ लिखो?
(12) कर्मधारय व बहुब्रीहि में अन्तर बताइए।
(13) पृष्ठांकन किसे कहते हैं?
(14) संक्षेपण व पल्लवन में अन्तर?
(15) कार्यालय ज्ञापन व ज्ञापन में अन्तर?
(16) उपसर्ग व प्रत्यय में अन्तर बताइए?
(17) ''क वर्ग'' की नियमावली लिखो?
(18) उच्चारण काल के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण करो?
(19) भाषा और वाक् में अंतर?
(20) स्वर व व्यंजनों में अन्तर बताइए?
(21) अपभ्रंश से विकसित दो भाषाओं के नाम?
(22) नागरी प्रचारिणी सभा के उद्देश्य?
(23) खड़ी बोली का विकास किस अपभ्रंश से हुआ?
(24) देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली 3 भाषाएँ लिखों?
(25) 92वाँ संशोधन द्वारा कौन–सी भाषाएँ अनुसूची–8 में जोड़ी गई?

प्र.2. प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। **2x 5 = 10**

¼i) श्लेष व यमक अलंकार में सोदाहरण अंतर?
(ii) उपमा व रूपक अलंकार में सोदाहरण अंतर?

प्र.3. (अ) निम्नलिखित का हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद कीजिए : (20 अंक)

(i) वाणी एक महान वरदान है। यह एक बड़ा अभिशाप भी हो सकती है।
(ii) जिव्हा की एक चूक अथवा एक असामान्य शब्द का प्रयोग एक ऐसे स्थान पर शत्रु उत्पन्न कर सकता है जहाँ हमने एक मित्र प्राप्त करने की आशा की थी।
(iii) एक शिक्षित व्यक्ति की सामान्य वाणी एक अशिक्षित श्रोता में गर्व प्रदर्शन जैसा प्रभाव उत्पन्न कर सकती है।
(iv) हम एक ऐसे शब्द का प्रयोग कर सकते हैं, जो हमारे श्रोता के लिए एक ऐसे अर्थ का वहन कर सकता है।

(i) केवल एक मूर्ख ही समस्त प्रकार की मानवीय परिस्थितियों और दशाओं में समान रूप से अपने को अभिव्यक्त करेगा।

प्र.3. (ब) निम्नलिखित का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कीजिए – (15 अंक)

(i) Democracy demand dicipline, tolerance and mutual regard.
(ii) Eyeedom demands respect forthe freedom of others.
(iii) Another government which commands that popular support takes its place.
(iv) It ishly small groiid who know that they can not get sufficient popular support resort to meth ods of violence.
(v) This is not utterly wrong] but it is also utterly foolish-

प्र.4 प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है? 10 x 2= 20

(i) रमेश बुद्धिमान बालक है, में, कौन–सा विशेषण है?
(ii) उद्धरण तथा लाघव चिह्न अंकित करो?
(iii) मोहन अचानक आ गया, रेखांकित शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है?
(iv) जग मंदिर में समास?
(v) नवग्रह का समास विग्रह?
(vi) रविप्रताप का समास विग्रह?
(vii) अभ्यर्थी का संधि विच्छेद?
(viii) भौ + अक की संधि बनाईए?
(ix) विपत् + जाल की संधि बनाईए?
(x) प्रत्युपकार में संधि?

प्र.5. प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है? 10 x 2= 20

(i) अकार्य का तद्भव
(ii) इमली का तत्सम
(iii) नीरस का विलोम
(iv) वासना व बासना का अर्थ?
(v) पताका के दो पर्यायवाची
(vi) क्षिप्रहस्त का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?
(vii) रंगा–सियार होने का अर्थ?
(viii) उल्टे बांस बरेली को का अर्थ?
(ix) Disparity का हिन्दी पारिभाषिक शब्द।
(x) मानहानि का अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द।

प्र.6. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (20 अंक)

'कल्पना' और 'व्यक्तित्व' की पाश्चात्य समीक्षा क्षेत्र में, इतनी अधिक मुनादी हुई कि काव्य के और सब पक्षों से दृष्टि हटकर इन्हीं दो पर जा जमीं। श्कल्पनाश काव्य का बोध पक्ष हैं। कल्पना में आई रूप–व्यापार योजना का कवि या श्रोता को अंतः साक्षात्कार का बोध होता हैं। कल्पना को रूप योजना के लिए अतिरिक्त काव्य का भाव पक्ष भी हैं। कल्पना को रूप योजना के लिए प्रेरित करने वाले और कल्पना में आयी हुई वस्तुओं में श्रोता या पाठक को रमाने वाली रति, करूणा, क्रोध, उत्साह, आश्चर्य इत्यादि भाव या मनोविकार होते हैं। इसी से भारतीय दृष्टि ने भावप्ख को प्रधानता दी और रस के सिद्धांत की प्रतिष्ठा की।

पर पश्चिम में 'कल्पना'– "कल्पना की पुकार के सामने धीरे – धीरे समीक्षकों का ध्यान भाव पक्ष से हट गया और बोधपक्ष ही पर भिड़ गया। काव्य की रमणीयता उस हल्के आनंद के रूप में ही मानी जाने लगी, जिस आनंद के लिए हम नई–नई सुन्दर भड़कीली और विलक्षण वस्तुओं को देखने जाते हैं। इस प्रकार कवि तमाशा दिखाने वाले के रूप में और श्रोता या पाठक तटस्थ तमाशबीन के रूप में समझे जाने लगें। केवल देखने का आनंद कुछ विलक्षण को देखने का कुतूहल मात्र होता हैं।

1. कवि या श्रोता अंतः साक्षात्कार बोध किसका होता हैं?
2. भारतीय दृष्टि में काव्य ने किस सिद्धांत की प्रतिष्ठा की?
3. केवल देखने का आनंद क्या हैं?
4. 'कल्पना' काव्य का कौन–सा पक्ष हैं?

प्र.7. निम्नलिखित का एक–तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए तथा रेखांकित पंक्तियों का भाव–पल्लवन अपने शब्दों में कीजिए। (अंक 10 + 10 = 20)

'निराला' छायावाद युग के कबीर थे। वैसे ही फक्कड़ वैसे ही मस्तमौला, वैसी ही झाड़ फटकार, वैसी ही ललकार, वैसी ही पुकार और वैसी ही प्रगाढ़ तन्मयता दोनों के व्यक्तित्व और कतित्व में गोचर है। **अपने–अपने युग की सीमाओं में दोनों ही क्रांति अग्रदूत थे। अपने युग की चेतना को जर्जर करने वाला अन्ध रूढियों के प्रति असहिष्णुता की अभिव्यक्ति देने में दोनों की ही वाणी बेलगाम रही।** अपने युग के शासन और पाण्डितत्य के प्रति दोनों ही असंकोचशील रहे। दोनों ही बाहर से उग्र और भीतर से सुकुमार थे। युग की दलित संत्रस्त मानवता की कराह के प्रति दोनों ही करूणा थे और करूणार्द्रता दोनों की ही तीखी व्यंग्योक्तियों के पीछे विद्यमान हैं। दोनों ही वेश से गृहस्थ और रहने में विरक्त से रहे अहंकार को चिढ़ाने वाली गर्वोक्तियों की घोषणा की प्रवृत्ति दोनों में ही था। दार्शनिक चिन्तर और आध्यात्मिक प्रेरणा के स्वर दोनों के ही काव्य में गूंजते रहे। लोक प्रसादन करते हुए भी लोक को कायल करने की दृढ़ता दोनों में ही दीखती है। दान को दोनों हाथ उलीचने की आदत दोनों में ही थी। अपनी–अपनी अनुभूति पर दोनों ही विहंगम मार्ग के पथक भी कहे जा सकते हैं। अन्तर केवल एक है और वह यह है कि कबीर जान में सन्त और अनजान में कवि थे और निराला जान में कवि और अनजान में सन्त थे। कबीर के युग ने कवि कबीर को नहीं पहचाना और निराला के युग ने सन्त निराला को नहीं पहचाना।'

INDORE